www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्षः 88 अंक एक
अश्विनी शुक्ला एकम्
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
5 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114
मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
संपादक मंडलः
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर
प्रकाशकः
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879
प्रकाशनः दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018
मुद्रकः
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स, जयपुर
ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दाऊकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

यह अंक महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास, जोधपुर के सौजन्य से

स्मृति भवन न्यास जोधपुर का महोत्सव सम्पन्न

अनुपम क्षमादान

महर्षि दयान्नद सरस्वती स्मृति भवन न्यास और 1885 में स्थापित आर्यसमाज जोधपुर (रातानाड़ा) के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 27.09.2013 से 30.09.2013 तक आयोजित राज्य स्तरीय महोत्सव पूर्ण हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यद्यपि कार्यक्रम का मुख्य स्वरूप 27 से 30 तक ही रहा लेकिन इसका प्रारम्भ 25 सितम्बर को प्रातः 7.30 बजे यजुर्वेद परायण यज्ञ के साथ ही हो चुका था। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने गुरुकुल शिवगंज की ब्रह्मचारिणीयों के सुमधुर वेदपाठ का सुचारु दिशा निर्देश करते हुए यज्ञ का बड़ी कुशला से संचालन व सम्पादन किया। 27 सितम्बर को प्रातः काल की पावन बेला में महोत्सव का शुभारम्भ 8.00 बजे से 8.30 बजे पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी अधिष्ठाता गुरूकुल आबू पर्वत के द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। ध्वजगान ब्रह्मचारिणी रामकुमारी के साथ सभी ब्रह्मचारिणियों ने किया। स्मृति भवन न्यास द्वारा प्रकाशित होने वाले "ऋषि स्मृति प्रकाश" मासिक पत्र का विमोचन स्वामी धर्मानन्द जी व न्यास प्रधान विजयसिंह जी भाटी ने किया। साथ ही सृष्टि के मूलतत्व, सृष्टिनिर्माण के ईश्वरीय प्रयोजन, मूलकारण, वैदिक त्रैतवाद एवं ऋषि के अनुपम क्षमादान को जनमानस के मनोमस्तिष्क में अंकित करने की भावना से प्रकाशिक चित्रों (कैलेण्डर) का भी विमोचन हुआ। इस संक्षिप्त कार्यक्रम के बाद विधिवत यज्ञ हुआ। प्रांतराश के बाद महोत्सव का पहला सम्मेलन "वेद व अध्यात्म सम्मेलन" के रूप में 10. 30 से 1.00 बजे तक हुआ। प्रारम्भिक वक्तव्य में पण्डित रामनारायण जी ने महोत्सव के विविध सम्मेलनों की संक्षिप्त भूमिका रखी। इसी के मध्य न्यास में निर्मित होने जा रहे एक विशाल सत्संग भवन का शिलान्यास करने वाले जोधपुर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष पूर्व में आर्यवीर दल के सक्रिय कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी का भावभीनी स्वागत न्यास के पदाधिकारियों – प्रधान विजयसिंह जी भाटी, मंत्री किशनलालजी गहलोत, कोषाध्यक्ष जयसिंह जी गहलोत, न्यास के व्यवस्थापक दुर्गादास जी वैदिक आदि ने किया।

महोत्सव के इस महत्वपूर्ण एवं प्रथम सम्मेलन का संयोजन रामनिवास जी गुण ग्राहक ने किया। स्वामी धर्मानन्दजी की अध्यक्षता में होने वाले इस सम्मेलन के मुख्य वक्ता डॉ. धर्मवीर जी कार्यकारी प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर एवं डॉ. वेदपाल जी (मेरठ) थे। डॉ. धर्मवीर जी ने मनु के श्लोक 'इदं शरणमज्ञानमिदमेव विजानताम्' को लेकर ईश्वर भक्ति को मानव मात्र के लिए अनिवार्य बताया। डॉ. वेदपाल जी ने ईश्वर भक्ति के नाम पर होने वाली अवैदिक प्रार्थनाओं की निःसारता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ईश्वर के साथ धोखा नहीं चलता। वेद के महत्व व उसके ईश्वरीय ज्ञान होने को सिद्ध करते हुए डॉ. वेदपाल जी ने बड़ी योग्यता के साथ सरल शब्दों में ईश्वरीय ज्ञान कहलाने वाले अन्य ग्रन्थों की सतर्क समीक्षा की। स्वामी धर्मानन्द जी का अध्यक्षीय भाषण ईश्वर भक्ति व वेद

यज्ञ से किसी दूसरे पदार्थो को अपना समझनें की प्रवृति नष्ट हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

की उपयोगिता को समेटे हुये था। दोपहर 2.00 से 5.00 बजे तक होने वाले नगर कीर्तन की आवश्यक जानकारियाँ संयोजक दुर्गादास ने आगन्तुक आर्यो को दी।

2.00 बजे से शोभायात्रा (नगर कीर्तन) की तैयारियाँ पूर्ण होकर सब आर्यजन अपने–अपने समाज के बैनर व झाँकियाँ लेकर पक्तिबद्ध होकर निकलने लगे। सोजती गेट नई सड़क से घंटाघर, कटला बाजार, आडा बाजार, जालौरी गेट, एम.जी.एच. रोड़ से होती हुयी यह विशाल शोभा यात्रा, जिसमें हाथी, घोड़े, नौपट वाले, बैण्ड बाजा, ऊंट व ट्रैक्टर – ट्रोली में यज्ञ की झाँकियों और आर्यवीर दल व आर्यवीरांगना दल के विविध प्रदर्शनों से परिपूर्ण यह शोभा यात्रा लगभग 5.00 बजे स्मृति भवन लौटी। इस शोभा यात्रा का फल जूस व आईसक्रीम के साथ कई स्थानों पर भव्य स्वागत किया गया। इस शोभा यात्रा का संचालन कैलाश चन्द्र आर्य ने किया। रात्रि 7.30 से 10.30 बजे तक स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में "धर्माचरण सम्मेलन" का संयोजक पण्डित रामनारायण जी ने किया। उन्होने धर्म की महत्ता बताते हुए भूमिका बनाई और डॉ. वेदपाल जी ने अपने विचार रखते हुए 'धारणाद्धर्मं इत्याहुः' की विशद् व्याख्या करते हुए वर्णधर्म का परिचय दिया। धर्म को व्यावहारिक जीवन का मूलाधार बताते हुए उन्होने महाभारतकार के शब्दों में घोषणा की – 'कर्मणा रहितो धर्मः न पृथिव्यां स्थिरो भवेत' अर्थात् (कर्म) व्यवहार का अंग बनाये बिना धर्म कभी पृथ्वी पर स्थिर नहीं रहता। भजनोपदेशक सत्यपाल जी ने "धर्म की ध्वजाएँ उड़ाओं" नहीं कर्म में धर्म का ध्यान देते रहो' पक्तियाँ गुनगुनाकर धर्म की व्यावहारिकता को पुष्ट किया। सरल जी के भजनों के चलते ही वर्षा की झड़ी लग गयी। यह महोत्सव जहाँ अपनी उपयोगिता और भव्यता के लिये जाना जायेगा वहीं इस दृष्टि से भी अविस्मरणीय रहेगा कि प्रथम दिन के अन्तिम सम्मेलन से प्रारम्भ हुई वर्षा ने अन्तिम दिन के प्रथम सम्मेलन तक निरन्तर साथ निभाया। टेण्ट पाण्डाल, यज्ञशाला से लेकर पुस्तक विक्रेताओं व भोजन व्यवस्था का जोधपुर के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने अपने महीनों के परिश्रम से जो प्रबन्ध किया वह सब 72 घण्टे की लगातार वर्षा की भेट चढ़ गया। ऋषि गाथा में कविवर प्रदीप जी की पंक्ति – जो कर्मठ होते हैं, वे मंजिल पा ही जाते हैं – को चरितार्थ करते हुए माननीय विजयासिंह जी भाटी एवं मंत्री किशनलाल जी के सक्रिय नेतृत्व में जोधपुर के कर्मठ आर्यो ने इस प्राकृतिक व्यवधान के साथ निरन्तर संघर्षशील रहकर तथा बाहर के लगभग 500 अतिथियों की संतोषजनक सेवा करते हुए जैन धर्मशाला में सुव्यवस्थित रूप से सभी सम्मेलनों को मूर्त रूप देकर अपने श्रम को सार्थक करके ही संतोष की सांस ली।

दूसरे दिन यज्ञ व प्रातराश के बाद डॉ. धर्मवीर जी की अध्यक्षता में चलने वाले 'मानव निर्माण (संस्कार) सम्मेलन' में बोलते हुए कुरु क्षेत्र विश्वविद्यालय से पधारे डॉ. राजेन्द्र जी विद्यालंकार ने कहा कि शरीर को व्यक्तित्व नहीं कहते और न शरीर के निर्माण को व्यक्तित्व निर्माण कहा जाता है। उन्होंने कहा कि संस्कार मात्र एक दिन का कार्य नहीं, जीवननिर्माण की यह प्रक्रिया सतत् चलती रहती है। आचार्य सूर्यादेवी जी ने 'मननात् मनुष्यः' को लेकर योग्यता व कर्त्तव्यपालन की क्षमता के विकास को जीवननिर्माण नाम दिया। डॉ. वेदपाल जी ने जातकर्म संस्कार के मंत्रों – 'अग्निरायु मान् ..... आयु मन्तं करोमि' आदि को लेकर संस्कारों की विशद् व्याख्या की। अध्यक्षीय भाषण को अपनी चिर–परिचित रोचक शैली में रखते हुए डॉ. धर्मवीर जी ने कहा कि संस्कारित व्यक्ति ही धार्मिक हो सकता है। संस्कार हीन आज का मानव आत्म चिन्तन से भयभीत है। सम्मेलन के संयोजक पण्डित रामनिवास गुण ग्राहक ने सभी वक्ताओं के विचारों का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत किया।

दोपहर से सम्मेलनों का स्थल बदल दिया गया और शेष सब सम्मेलन जैन धर्मशाला में हुए। 2 से 5 बजे "परिवार समाज संगठन सम्मेलन" का संयोजन पं. रामनारायण जी ने किया व अध्यक्षता डॉ. वेदपाल जी ने की। यह सम्मेलन मूलरूप से भजनोपदेशकों का रहा। जिसमें भूपेन्द्रसिंह जी, सत्यपाल जी सरल, दिल्ली से पधारी बहिन स्वदेश जी व अशोक जी के पारिवारिक कर्त्तव्यों की प्रेरणा देने वाले भजन हुए। स्वामी सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता में होने वाले रात्रिकालीन 'वर्णाश्रम व्यवस्था सम्मेलन' का संयोजन डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार ने किया और मुख्य वक्ता के रूप में मुम्बई के पुलिस कमिश्नर सत्यपाल सिह आर्य ने परिवार व समाज की एकता पर अपने विचार रखे।

29 सितम्बर, को यज्ञ के बाद 'राष्ट्रोदय व राजधर्म सम्मेलन' आचार्य बलदेव जी–प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अध्यक्षता में हुआ। संयोजक पं.. रामनिवास जी गुणग्राहक ने सम्मेलन के संक्षिप्त, प्रभावी भूमिका रखते हुए – रातदिन अपनी जड़ों

यज्ञ से प्रलोभन, आत्मश्लाघा के आकर्षण से मनुष्य सर्वथा पृथक हो जाता है।

www.thearyasamaj.org

को खोदता देश हिन्दुस्तान को क्या हो गया – पक्तियाँ बोलकर आचार्या सूर्यादेवी जी को मंच पर आमन्त्रित किया। सूर्यादेवी जी ने राष्ट्रोदय के लिए युवा वर्ग व नारी जाति को सजग रहकर कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा की। गुरूकुल शिवगंज की ब्रह्म चारिणी रामकुमारी ने कश्मीर को लेकर अपनी ओजस्वी कविता प्रस्तुत कर सबकी प्रशंसा प्राप्त की। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में आचार्य बल्देव जी ने बताया की राजा श्रीराम जैसा होना चाहिए जिसे नौ लाख वर्ष बाद भी जनता अपना पूर्ण सम्मान देती है। उन्होंने कहा कि राजा श्रेष्ठ होगा तो जनता भी श्रेष्ठ होगी। राजा चारों वेदों का ज्ञाता व प्रजा – रक्षक होना चाहिए।

दोपहर 2.00 से 5.00 बजे के 'भोगवाद और ऋषि दयानन्द का आर्थिक चिन्तन सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. वेदपाल जी ने की और संयोजक थे – पं. रामनारायण जी। भजनोपदेशिका स्वदेश जी दिल्ली के सुमधुर भजनों के बाद प्रथम वक्ता के रूप में पण्डित रामनिवास जी ने वर्तमान भोगवाद जो व्यापारवाद पर सवार होकर हमें भोगी से रोगी बनाने में पूरीशक्ति से जुटा हुआ है, की सतर्क विवेचना करते हुए वैदिक त्यागवाद की महत्ता को प्रतिपादित किया। डॉ. धर्मवीर जी ने ऋषि के आर्थिक चिन्तन को लेकर गौ की वर्तमान दुर्दशा का चित्रण करते हुए ऋषि के शब्दों में गाय को राष्ट्र का आर्थिक आधार बताया। अध्यक्षीय भाषण में डॉ. वेदपाल जी ने ऋषि के पत्रों का उद्धरण देते हुए महर्षि को एक उत्कृष्ट अर्थशास्त्रीय सिद्ध किया। महर्षि को जोधपुर में 29 सितम्बर को ही विष दिया गया था, इसलिए रात्रि 7.30 से 10.30 बजे तक डॉ. धर्मवीर जी की अध्यक्षता में "ऋषि दयानन्द व्यक्तित्व व कृतित्व सम्मेलन" हुआ, जिसका संयोजन पण्डित रामनिवास गुणग्राहक ने किया। सरल जी का भजन – "ऋषि दयानन्द अगर न आते, भंवर से नैया पार न होती" के बाद पण्डित रामनारायण जी ने बताया कि ऋषि से पूर्व मनुष्य संसार के सब पदार्थों के साथ अपना संबंध भूल गया था। ऋषि ने पंचयज्ञों के रूप में हमें उन सम्बन्धों का बोध कराया। पण्डित रामनिवास जी गुणग्राहक जो आजकल ऋषि स्मृति भवन की उसी कोठरी में ठहरे हैं जो कभी ऋषि की रसोई थी। उन्होंने तत्कालीन इतिहास में डुबकी लगाते हुये एक भावपूर्ण गीत – "ऐ रसोई बता उस समय की कथा, जब ऋषिराज यहाँ पर थे आये हुए। तुझको होगी खुशी मेरे प्यारे ऋषि खाते भोजन यहाँ के पकायें हुए।।" का सरस गायन किया तो श्रोतागण भी भावुक हो उठे। डॉ. वेदपाल जी ने बुद्ध व ऋषि दयानन्द के वैराग्य की मीमांसा करते हुए ऋषि के व्यक्तित्व से लेकर उनके कृतित्व – लोक कल्याण तक की भूरि–भूरि प्रशंसा की। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में गौरव के भाव भरते हुए डॉ. धर्मवीर जी ने कहा कि जो दयानन्द से जुड़ गया वह किसी पाखण्डी प्रपंच से नहीं जुड़ सकता। वह ऋषि के विश्व कल्याण का अंग बन जाता है।

अन्तिम दिन 30 सितम्बर को स्म ति भवन की यज्ञशाला में ही यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति आचार्या सूर्यादेवी जी ने बड़े हर्षोल्लास के साथ कराई। 10.00 से 1.00 बजे तक स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में हुये "आर्य समाज गौरव (कार्य और प्रभाव) सम्मेलन" के संयोजक पण्डित रामनारायण शास्त्री ने भूमिका बनाकर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. धर्मवीर जी को बुलाया तो उन्होंने सर्वप्रथम प्रतिकूल परिस्थितियों में भी धैर्य और प्रतिबद्धता के साथ निरन्तर की वर्षा में भी निरन्तर लगे रहकर, अतिरिक्त श्रम करते हुए महोत्सव को सफल बनाने में जोधपुर के कर्मवीर आर्यों ने जिस निष्ठा का परिचय दिया उसके लिये सब आर्यों को धन्यवाद व साधुवाद दिया। आगे प्रेरणा देते हुए धर्मवीर जी ने कहा कि पूर्वजों के तप त्याग की सुरक्षा करना हमारा धर्म है। डॉ. वेदपाल जी ने आर्य समाज के कार्य और प्रभाव को लेकर विशद् चर्चा की इसी अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी व न्यास प्रधान विजयसिंह जी भाटी ने आर्य जगत् के प्रमुख प्रकाशकों को सम्मानपत्र व श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। न्यास के मंत्री श्री किशनलाल आर्य व कोषाध्यक्ष जयसिंह जी गहलोत व व्यवस्थापक दुर्गादास जी वैदिक आदि गणमान्य आर्यों ने सम्मान राशि व शाल भेंट किये। स्वामी धर्मानन्दजी के अध्यक्षीय उद्‌बोधन में आर्यो को निरन्तर धर्मपथ पर चलने की प्रबल प्रेरणा के साथ न्यास प्रधान विजयसिंह जी भाटी ने अपने भावुक उद्‌बोधन में सब आर्यों को मिलजुलकर काम करने का आह्‌वान किया। इस सम्मेलन में सम्मानित होने वाले प्रकाशकों मे धर्मेश आर्य विचार चैनल, लाजपतराय अग्रवाल और परोपकारिणी सभा के मंत्री ओममुनि जी ने अपने विचार रखे तथा अजय कुमार दिल्ली ने विचार रखते हुए भेट राशि को पुनः न्यास को दान रूप में दे दिया।

दोपहर 2.00 से 5.00 बजे तक का "अन्धविश्वास व कुरीति निवारण सम्मेलन" सूर्यादेवी जी की अध्यक्षता व रामनारायण जी के संयोजन में चला जिसमें ओमप्रकाश जी राघव, स्वदेश आर्या, सत्यपाल सरल, भूपेन्द्र जी व अशोक कुमार के भजनों के बाद आचार्या सूर्याजी के प्रखर प्रवचन अध्यक्षीय उद्‌बोधन के रूप में हुये। जैन धर्मशाला से चलकर सब आर्यजन स्मृति भवन पहुँचे। ब्रह्मचारिणी

www.thearyasamaj.org

रामकुमारी के नेतृत्व में ध्वजगान हुआ। स्वामी धर्मानन्द जी व विजयसिंह भाटी जी ने ध्वजावतरण किया। भाटी जी ने अपने उद्बोधन में सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया कि आपके अथक श्रम ने महोत्सव को सफल बनाया है। महोत्सव की व्यवस्था के लिये बनी सभी समितियों के प्रमुखों व अनुशासित रहकर मूक साधना में लगे समस्त कार्यकर्ताओं को साधुवाद देते हुए महोत्सव की समाप्ति की घोषणा की। साथ ही दुर्गादास जी वैदिक ने पूरे राजस्थान से पध ारे हुये आर्यजनों को प्रतिवर्ष इसी प्रकार उत्सव में पधारने की प्रार्थना की। दिनांक 29 सितम्बर को दोपहर 3 बजे न्यास भवन में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा की एक महत्वपूर्ण बैठक भी हुई। स्मृति भवन न्यास (आर्य किशनलाल गहलोत)

राजस्थान के आर्य सन्यासी

डॉ. भवानीलाल भारतीय

जिस समय स्वामी दयानन्द राजस्थान की अपनी अंतिम यात्रा (1883) में आये उस समय उनके साथ दो संन्यासी शिष्य थे- स्वामी आत्मानन्द जो मूलतः गढवाल के थे और दूसरे स्वामी गोपालगिरि (अधिक परिचय उपलब्ध नहीं) 31 अक्टूबर 1883 को महाराज की चिता को अग्नि स्वामी आत्मानन्द ने ही दी थी। उदयपुर निवास के समय एक अंधे सन्यासी गिरानन्द ने स्वामी जी का शिष्यत्व स्वीकार किया इसका उल्लेख भी मिलता है। राजस्थान के आर्य सन्यासियों में सर्वाधिक विद्वान, तपस्वी तथा शास्त्रज्ञ स्वामी नित्यानन्द जी ब्रह्मचारी थे। इनका जन्म जालौर नगर के श्रीमाली ब्राह्मण पं. पुरुषोत्तम के यहां 1860 में हुआ था। काशी में अध्ययन करते समय इनका परिचय स्वामी गोपाल गिरि से हुआ और उन्हीं से उन्हें वैदिक संस्कार मिले।

कालान्तर में स्वामी नित्यानन्द ने आजीवन वैदिक धर्म का प्रचार किया। उनका कार्यक्षेत्र ब्रिटिश भारत के अतिरिक्त देशी रियासतें रहा। शाहपुराधीश सर नाहरसिंह ने उन्हें राजगुरु का सम्मान दिया। इनकी प्रेरणा से उन्होंने सत्यार्थप्रकाश की शैली पुरुषार्थी प्रकाश ग्रंथ की रचना की। कई शात्रार्थ किये तथा सर्वत्र वैदिक धर्म की दुंदुभि बजाई। इनका परिचय एक अन्य आर्य संन्यासी स्वामी विश्वेश्वरानन्द से यात्रा प्रसंग में हुई। दोनों संन्यासी प्रगाढ़ मैत्री समबन्ध में बंध गये। साथ-साथ प्रचारार्थ जाते तथा लेखन कार्य भी साथ ही करते। आर्य प्रादेशिक सभा ने उनके नाम से 'विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान' की स्थापना पहले लाहौर में (बाद में होशियारपुर में) की। आज विश्वेश्वरानन्द का नाम तो याद रहा किन्तु उनके विद्वान सहयोगी स्वामी नित्यानन्द को लोग भूल गये। स्वामी नित्यानन्द का निधन 1914 में मुम्बई में हुआ।

स्वामी व्रतानन्द जब ऋषि दयानन्द चित्तौड़गढ़ का किला देखकर नीचे उतरे तो उन्होंने वहां उपस्तिथ लोगों से कहा- काश इस वीर स्थली (चित्तौड़) में कोई गुरुकुल खुलता और यहाँ से महाराणा प्रताप जैसा कोई वीर शिक्षित होता। ऋषि की इस कामना को पूरा किया लुधियाना जिले के निवासी, गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक बने युधिष्ठिर विद्यालंकार (1892-1980) ने उन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। संन्यासी बनकर व्रतानन्द बने तथा 1929 में चित्तौड़ रेलवे स्टेशन पर भूमि लेकर गुरुकुल की स्थापना की। आजीवन उन्होंने इस गुरुकुल का संचालन किया तथा आर्ष पद्धति पर यहां का पाठ्यक्रम चलाया। उनके अनेक शिष्यों में स्वामी वृतानन्द वेद वागीश तथा पं. सत्यानन्द वेद वागीश के नाम जाने माने है। अलीगढ़ जिले के मूल निवासी पं. चैनसुखदास ने अजमेर में नौकरी करते समय वैदिक धर्म प्रचार का बीड़ा उठाया तथा कालान्तर में संन्यासी बनकर विद्यानन्द विदेह बने। वेद संस्थान की स्थापना की, वेदों की सुरूचिपूर्ण व्याख्याएं लिखीं, प्रचारार्थ देश विदेश में भ्रमण किया। कतिपय सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण आर्य समाज से पृथक भी हुए किन्तु उनकी वेदनिष्ठा में कोई कमी नहीं आई।

अजमेर के प्रसिद्ध आर्य नेता कुं० चांदकरण शारदा ने जीवन के उपसंहार काल में संन्यास धारण किया तथा स्वामी चन्द्रानन्द नाम धारण किया। 1957 में उनका निधन हो गया। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में स्वामी प्रकाशानन्द नामक एक संन्यासी जोधपुर नरेश के भाई महाराज प्रतापसिंह का गुरु बनकर आया किन्तु इसने मांसाहार का प्रचार किया अतः यह सम्मान का पात्र नहीं बन सका। स्वामी चेतनानन्द नामक एक तपस्वी संन्यासी ने आर्य समाज शिवगंज तथा सिरोही को केन्द्र बनाकर गोडवाड़ (जालौर - भीनमाल क्षेत्र) तथा गुजरात में धर्म प्रचार किया। स्वामी स्वतंत्रानन्द यद्यपि सभा के सेवा केन्द्र (बांसवाड़ा तथा कुशलगढ़) में वर्षों तक रहकर पहाड़ी, आदिवासी जातियों में शिक्षा का प्रचार किया। इनका जीवन त्याग, तपस्या पूर्ण आत्म विज्ञापन से दूर रहा। जोधपुर के आर्य नेता और समजा सेवी वकील च्यवन आर्य (चिमनलाल आर्य) ने 1956-57 के हिन्दी सत्याग्रह के समय संन्यास लेकर स्वामी चेतनानन्द नाम धारण किया। ये निष्ठावान आर्य थे। इनके बड़े पुत्र डॉ. सत्यदेव आर्य वर्षों तक राजस्थान में स्वास्थ्य विभाग के निदेशक रहे थे।

आर्य समाज ब्यावर को केन्द्र बनाकर दो आर्य संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द तथा स्वामी शान्तानन्द ने वर्षो तक प्रचार का कार्य किया। शेखावाटी तथा चूरू जिले में आर्यसमाजों की स्थापना करने वाले महात्मा कालूराम (मूलतः रामगढ़ सेठों का) भी आर्य सन्यासी थे। उन्होंने स्वामी दयानन्द का प्रत्यक्ष शिष्यत्व ग्रहण किया था। हरियाणा जिला रोहतक से राजस्थान आकर इस प्रान्त में धर्म प्रचार को गति देने वाले स्वामी सुमेधानन्द ऐसे युवा संन्यासी हैं जिन्होंने प्रथम श्रीगंगानगर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया, कालान्तर में पिपराली (जिला सीकर) में वैदिक आश्रम की स्थापना कर अनेक रचनात्मक प्रवृत्तियों का संचालन किया और कर रहे हैं। इसी प्रकार पूर्वी राजस्थान में स्वामी सत्यानन्द तथा अन्य अनेक आर्य संन्यासियों ने सामर्थ्यानुसार वैदिक धर्म की अभिवृद्धि में अपना योगदान दिया है। शाहपुरा में स्वामी आत्मानन्द नामक संन्यासी ने वर्षों तक कार्य किया। प्रसिद्ध उपदेशक पं. रामसहाय शर्मा मूलतः जयपुर जिले के थे। वे राजस्थान सभा के वर्षों तक महोपदेशक रहे तथा कालान्तर में स्वामी ओम भक्त बनकर मृत्यु पर्यन्त (1972 में) ग्राम-ग्राम नगर-नगर में धर्म प्रचार की अलख जगाई।

स्थानीय स्तर के आर्य संन्यासियों ने अपने सामर्थ्य के अनुसार वैदिक धर्म तथा समाज सेवा में अपना योगदान दिया है। जोधपुर के स्वामी सेवानन्द (पूर्वाश्रम में लालूराम टाक) ने गोरक्षा के कार्य को आगे बढ़ाया। अजमेर के स्वामी सेवानन्द (पूर्वाश्रम में हरिसिंह आर्य) ने प्रथम वानप्रस्थ और तत्पश्चात् संन्यास लेकर धर्मप्रचार में अपना योग दिया। अजमेर के ही स्वामी केवलानन्द (पूर्वाश्रम में पं. छगनलाल कश्यप) ने स्वामी सर्वानन्द जी से संन्यास लिया तथा विभिन्न स्थानों में अपने प्रचार केन्द्र बनाये।

315, शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

यज्ञ औषधि रूप हैं क्योंकि ऋतृ संधियों जो रोग उत्पन्न होते है उसका नाश करता है।

www.thearyasamaj.org

पं. नरेन्द्र जी हैदराबादी की जन्म शताब्दी पर विशेष

हैदराबाद के शेर, जिसके बारे पूछने पर निजाम हैदराबाद को बताया गया कि 'यह वही डेढ बलिष्ठ का नरेन्द्र है जिसने पूरी रियासत की नाक में दम कर रखा है।' नरेन्द्र जी की महानता को दर्शाने के लिए यही शब्द ही काफी हैं। नरेन्द्र जी देश के गौरव की रक्षा के लिए अपना सब कुछ होम करने के लिए साधारणतया यह पंक्तियां गुनगुनाया करते थे-

फूला फला रहे या रब चमन मेरी उमीदों का,
जिगर का खून दे दे कर ये बूटे मैंने पाले हैं।।

हैदराबाद राज्य का इतिहास पं. नरेन्द्र जी के वर्णन के बिना अधूरा है क्योंकि यह पं. नरेन्द्र जी ही थे, जिनके प्रयास व मेहनत के परिणाम स्वरूप न केवल वहाँ आर्य समाज ही मजबुत हुआ अपितु निजाम उनके नाम मात्र से ही भयभीत होने लगा। यद्यपि पं. जवाहर लाल नेहरू जी का नाम पण्डित जी के सम्बोधन से लिया जाता था किन्तु हैराबाद में नरेन्द्र जी ने अपनी इतनी छाप छोड़ी कि वहाँ यदि कहीं पण्डित जी का शब्द आता तो लोग इसका अभिप्रायः नरेन्द्र जी से ही लेते थे।

आपका जन्म राय श्री केशवप्रसाद जी के यहाँ 20 अप्रैल 1897 की रामनवमी के दिन हुआ। इस कारण विधर्मियों को आपने ऐस स छकाया जैसे श्री राम ने राक्षसों को। पं. रामचन्द्र जी देहलवी के प्रभाव से आर्य बने। उपदेशक विद्यालय लाहौर में स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी के पास अध्ययन किया। आपकी ओजस्वी लेखनी ने आपको लाहौर में ही जेल के दर्शन करवां दिये।

हैदराबाद में निजाम की निरंकुशता तथा उसके आर्यों व हिन्दुओं पर अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ते ही चले जा रहे थे। आर्यों को तो अपने दैनिक क्रिया कलापों को भी नहीं करने दिया जाता था। यहां तक कि एक आर्य परिवार के निवास पर ओ३म् पताका लगी देख कर उसे गोली मार दी जाती। इतना ही नहीं उसको गोली मारने के पश्चात् उसके घर में आग लगा कर घायल पति सहित पत्नी को भी जिन्दा जला दिया जाता। इस प्रकार के अत्याचार न केवल नरेन्द्र जी के लिए चुनौती बने अपितु नरेन्द्र जी स्वयं निजाम के सामने चुनौती बन कर खड़े हो गए। उन्होंने करो या मरो की नीति आ अनुसरण किया। जबकि वहां पर निजाम के विरूद्ध खड़े होना कोई साधारण बात न थी। तो भी नरेन्द्र जी डट गए। उन्होंने आर्य समाज व स्वामी दयानन्द की शिक्षा को साक्षात् किया था व उन्हीं से बलिदानी परम्परा पाई थी। फिर जो आर्य समाज अंग्रेजों से निरन्तर आजादी के लिए लड़ रहा था हैदराबाद का निजाम उसके लिए क्या चीज थी। हैदराबाद में 1930 में आर्य समाज ने नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए लड़ाई आरम्भ की। इसी मध्य ही आर्य समाज को इतना सहयोग मिला कि 1931 में वहाँ आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना भी हो गई। शीघ्र ही सत्याग्रह का शंखनाद हुआ। तेजी से जेलों में बंद सत्याग्रहियों की संख्या बढ़ने लगी। निजाम पं. नरेन्द्र जी से तो पहले से ही भयभीत था, अब उनको स्वाधीन रखना उसके लिए बहुत बड़ा खतरा था। अतः उन्हें कालापानी से भी अधिक भयानक कारागार, जो महबूबनगर के घने जंगलों में बनी थी, में कैद रखा गया।

निजाम की नाम मं दम आ चुका था। 12000 सत्याग्रहियों के भोजन की व्यवस्था ने उसके राज्य की अर्थ व्यवस्था को भी हिला कर रख दिया था। अतः उसने घुटने टेक दिये। आर्यों की सब शर्ते मान लीं किन्तु नरेन्द्र जी से अब भी इतना भयभीत था कि इन्हें अब भी छोड़ने को तैयार न था। पीट-पीट कर उनका घुटना तो तोड़ ही चुके थे। केवल इसी प्रश्न पर सत्याग्रह डेढ महीना और खिंच गया। अंत में निजाम ने उन्हें भी रिहा कर दिया। इसी मध्य निजाम से भयभीत उनके जातीय परिजनों ने नरेन्द्र जी से संबंध तोड़ लिये। मैं जब 1938 में प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी के साथ हैदराबाद सभा कार्यालय में उनसे मिला तो उन्होंने बताया कि अब जातीय पंचायत मुझे अपने साथ देखना चाहता था किन्तु अब तो आर्य समाज ही मेरी जाति है तथा सभा कार्यालय ही मेरा घर है। वह फिर जीवन भर अपनी जाति से अलग ही रहे।

आपने वैदिक आदर्श पत्रिका का संपादन किया। आपकी लिखी पुस्तक दयानन्द आजम अत्यन्त ही पठनीय पुस्तक है। पं. जी एक अद्वितीय संगठनकर्ता थे। उनके सहयोग से ही बड़े-बड़े सम्मेलनों यहां तक कि 1972 के आर्य समाज शताब्दी समारोह का आयोजन सफल हो पाया। छोटे कद के नरेन्द्र जी सदा शांत व गम्भीर रहते हुए चुपचाप इतनी विशाल व सफल योजना बना डालते थे कि देखने वाले दंग रह जाते थे। 1975 में स्वामी सत्य प्रकाश जी ने आपको संन्यास की दीक्षा दी तथा आपको नया नाम स्वामी सोमानन्द दिया। आपका देहान्त 24 सितम्बर 1978 ई. को हैदराबाद में ही हुआ। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर यदि हम भी उन्हीं के मार्ग पर चलते हुए, आपसी मतभेद भुलाकर तथा जिस प्रकार नरेन्द्र जी ने अपने जीवन में कभी पद की लालसा नहीं की, उसी प्रकार पद लौलुपता को त्याग कर संगठन को मजबूत कर प्रचार में लगे तो निश्चित ही हम बहुत कम समय में महर्षि के स्वप्न साकार कर सकेंगें। अतः आओ हम प्रतिज्ञा करें कि आर्य समाज का कार्य करते हुए लोकेषणा, वित्तेषणा, पदेषणा व परिवारेषणा को कभी आडे नहीं आने देंगे। हमारा एक ही उद्देश्य होगा, केवल महर्षि के स्वप्न को साकार करना।

-डॉ. अशोक आर्य, गाजियाबाद

एक सोच

हर महिला शिक्षा प्राप्त करे। वह इतनी तो शिक्षित हो जाए, कि उसे संविधान के अनुच्छेदों का ज्ञान हो जाए। वह समानता के अधिकार को समझ पाए। हमे लड़कियों को सभी का सम्मान करना है परन्तु अब अपना अपमान भी नहीं सहना है। लड़कियां आत्मविश्वासी बनें, आत्मनिर्भर बनें, यह जिम्मेदारी समाज की है।

विभा आर्य, अलवर

यज्ञ से सतत् पुरुषार्थ करने के पश्चात ही फल प्राप्त होता है। उससे मनुष्य संतुष्ट रहता है।

www.thearyasamaj.org

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य का कनाड़ा से श्रीयुत वानप्रस्थ सत्यनारायणजी को पत्र

* ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

* आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका (ए.पी.एस.ए.) तथा वैदिक कल्चरल सैन्टर (वीसीसी) के आमंत्रण पर 26 जुलाई को यहाँ पहुँचा। 2 से 4 अगस्त को ए.पी.एस.ए. का 23वाँ वार्षिक महा सम्मेलन हुआ, जिसमें लगभग 250 आर्यो ने, जो यू.एस.ए. के अनेक राज्यों के आर्य समाजों के सदस्य थे, भाग लिया उनमें 20-25 युवक तथा युवतियाँ भी थे। अनेक विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर खोज पूर्ण वक्तव्य दिये। कुछ विषयों को छोड़कर सम्मेलन अच्छा रहा सभा के प्रधान-डॉ. रमेश जी गुप्ता, मंत्री श्री विश्रुत जी आर्य का प्रयास भी प्रशंसनीय, अनुकरणीय रहा। मैंने भी यथा अवसर ध्यान, यज्ञ कराया, प्रवचन दिये तथा अध्यापन व शंका समाधान किया।

* स्वामी दयानन्द जी ने विश्व का वैदिकीकरण करने के लिए जिन उपायों, साधनों, विधि-विधानों का निर्धारण किया है, उन्हीं को मुख्य बनाकर, संगठित होकर, योजनाबद्ध रूप में, पूर्ण पुरुषार्थ, त्याग, तपस्या के साथ, निष्काम भावना से कार्य करेंगे तो सफलता अवश्य ही मिलेगी। वर्तमान के समाजों की अकर्मण्य, शिथिल, अस्त व्यस्थ, न्यूनता, ह्रास आदि की दुरवस्था को देखकर, परस्पर दोषारोपण, रोना पीटना आदि करके, निराश होकर निष्क्रिय उपेक्षित हो जाने से कुछ नहीं होगा। कर्म तो करना ही है, यह ईश्वर की इच्छा है, वेद का आदेश है, ऋषियों का संदेश है, महापुरुषों की प्रेरणा है। जिन कारणों से आर्य समाज रूपी आंदोलन असफल हो रहा है उनको जानकर दूर करने के लिए सुसंगठन बनाना होगा, नये संकल्पों के साथ त्याग और तपस्या के साथ घोर पुरुषार्थ करना पड़ेगा, तभी उग्र प्रतिद्वन्दियों के साथ स्पर्धा में विजय मिलेगी, अन्यथा विनाश अवश्यम्भावी है।

* निराशावाद की इस मानसिकता को सर्वथा तिलाञ्जलि दे देनी चाहिए कि 'कुछ नहीं होगा, कोई भी सुनता नहीं है, कोई भी आता नहीं है, सभी स्वार्थी बन गये हैं, मैं अकेला क्या कर सकता हूँ, परिश्रम करना बेकार है, घर में शांति से बैठे रहो, हमें झगड़ा नहीं करना है, अपमानित नहीं होना है, अब तो ऋषि स्वयं भी आ जायें तो भी सुधार नहीं होगा आदि आदि' बल्कि कुछ लोगों की तो ऐसी प्रवृत्ति बन गयी है कि वे स्वयं तो कुछ नहीं करते हैं किन्तु जो कुछ आशावादी-उत्साही-कार्यकर्ता कुछ करना चाहते हैं, उनको भी हतोत्साहित करते हैं असहयोगी बनते हैं और अनेक प्रकार से बाधायें उत्पन्न करते हैं, ऐसी घातक प्रवृत्ति वाले तो विरोधी शत्रुओं से भी अधिक हानिकारक सिद्ध होते हैं। इन सबको रोकना भी एक महत्वपूर्ण प्रयोजन हैं। इसको रोके बिना सारे पुरुषार्थ तपस्या त्याग, निष्फल हो जाते हैं।

21वीं शताब्दी में पलने वाली युवा पीढ़ी ने, अत्याधुनिक शिक्षा संस्थानों में उच्च स्तर की भौतिक विद्याओं का अध्ययन करके विशिष्ट योग्यताएँ-उपाधियां प्राप्त की हैं, और औद्योगिक निकायों में सेवा देकर लाखों रुपये मासिक धनोपार्जन कर रहे हैं, परिणाम स्वरूप उत्तम स्तर के जीवनोपयोगी साधन सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं। आध्यात्मिक भाषा में कहें तो इन्होंने प्रेयमार्ग का चयन करके अपरा=भूत-भौतिक विज्ञान के माध्यम से लौकिक सुखों को प्राप्त करके अभीष्ट की सिद्धि कर ली है, यह प्रसन्नता की बात है, किन्तु यह स्थिति अपूर्ण है, जब तक पराविद्या को जानकर श्रेयमार्ग पर चल कर, निःश्रेयस् का लक्ष्य बनाये-पीति=पूर्णानन्द की प्राप्ति नहीं होती है तब तक जीवन अधूरा है, असफल ही रहता है।

* वेदादि समस्त धार्मिक शास्त्रों में जिन कार्यो को अधर्म, अभद्र, अशिष्ट अश्लील, अनर्थकारी बताया गया है, अन्ततोगत्वा जिनका परिणाम समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए दुःखदायी बताया गया है, उन सबको यह नई पठित पीढ़ी खुले आम, निःसंकोच, स्वच्छन्दता से कर रही है, इतना ही नहीं राज्याधिकारी, नेता, श्रीमंत, बुद्धिमान, प्रतिष्ठित-विद्वान भी इनका विरोध नहीं कर रहे हैं। बल्कि कहीं पर ऐसा हो रहा कि अनिष्टकारी कार्यों को करने का विधान बनाया जा रहा है, अधिकार दिया जा रहा है, उन्हें साधन-सुविधाएं छूट देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे भी अधिक आश्चर्य एवं शोक होता है कि आत्मबल के अभाव के कारण इन सबको हानिकारक मानते हुए भी अभिभावक, गुरु, आचार्य राग या मोह या स्वार्थ के कारण इन सबका निषेध करने का साहस नहीं कर पा रहे हैं।

* मात्र संध्या, यज्ञ, स्वाध्याय, सत्संग आदि व्यक्तिगत कर्तव्यों को येन केन प्रकारेण सम्पन्न करके हम यह मान बैठे हैं कि मेरा सामाजिक राष्ट्रीय दायित्व पूरा हो गया है, यह भ्रान्त धारण है झूठाआत्म संतोष है। देव संस्कृति को विनष्ट करने हेतु आसुरी शक्तियां पूर्ण संगठित होकर तन, मन, धन, जीवन समर्पित करके, सम्पूर्ण बल के साथ लगी हुई है और हम ऐसा होते हुए देख रहे हैं, पढ़ रहे हैं, सुन रहे हैं, इसके प्रतिकार के लिए कोई विचार, योजना, त्याग बलिदान की भावना नहीं तो फिर कौन आयेगा इसको बचाने के लिए? क्या ईश्वर आयेगा। स्वामी दयानन्द जी आयेंगे? नहीं हमें ही ये सब कार्य करने होंगे। पाशविक-आसुरी शक्तियों के क्रूर कुकर्मों को रोकने के लिए हमें ही बलिदान करना होगा हे प्रभो! आप से हार्दिक प्रार्थना है कि आत्मा में ऐसे दिव्य भावों को भरो कि स्वार्थ की संकुचित विचारधारा को छोड़कर सर्वात्मना इस महत्वपूर्ण कार्य को करने के लिए सुसज्जित हो जायें।

कार्यालय आर्य उप प्रतिनिधि सभा, भीलवाड़ा के चुनाव सम्पन्न

जिला सभा के चुनाव सम्पन्न श्री मदन जी आर्य कादेड़ा सम्भागीय प्रतिनिधि एवं उप प्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सानिध्य एवं श्री गणपत लाल शर्मा की अध्यक्षता में भीलवाड़ा आर्य उप प्रतिनिधि सभा के चुनाव दिनांक 15.9.2013 को सर्व सम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुए-

संरक्षक-श्री राज किशोर जी मोदी

प्रधान अध्यक्ष-श्री गणपत लाल जी आर्य

उप प्रधान-श्री कन्हैया लाल आर्य, मंत्री-श्री रामकृष्ण छाता

कोषाध्यक्ष- श्री गोपाल लाल जी शर्मा

प्रचार मंत्री- श्री कन्हैया लाल जी शाहू

सदस्य- श्री स्वामी अम्बानन्द जी सरस्वती, लादू लाल जी सेन, श्री नाथूलाल जी त्रिवेदी, श्री महावीर प्रसाद जी दाधीच, श्री रतन लाल जी शर्मा, श्री दिनेश शर्मा, श्री दिनेश शर्मा आर्यवीर अधिष्ठाता। -श्री रामकृष्ण छाता

यज्ञ मनुष्य में त्याग की भावना उत्पन्न करता है। क्योंकि स्वाहा शब्द कह रहा है- स्व का त्याग।

www.thearyasamaj.org

आर्य कन्या विद्यालय समिति, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर द्वारा
'पूर्व छात्रा स्नेह मिलन समारोह' हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आज दिनांक 22 सितम्बर 2013, रविवार को **'पूर्व छात्रा स्नेह मिलन समारोह'** प्रातः 10:00 बजे से 2:00 आयोजित किया गया।समारोह प्रातः 10:00 बजे हवन से प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात छात्राओं का पुष्पों से स्वागत एवं स्नेह मिलन आयोजित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर वसुधेश आर्य एवं अध्यक्ष श्री आनन्दजी आर्य, कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का विद्यालयी छात्रा भूमिका एवं चांदनी ने वैदिक परम्परानुसार तिलक लगाकर बैण्ड की अगुवाई में स्वागत किया। मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर वसुधेश आर्य का जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति; अध्यक्ष श्री आनन्दजी आर्य का प्रदीप आर्य, मंत्री (आर्य कन्या विद्यालय समिति) तथा श्रीमती ब्रिगेडियर वसुधेश आर्य का कमला शर्मा, निदेशक, आर्य कन्या विद्यालय समिति ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। विद्यालयी छात्राओं द्वारा 'अभिनन्दन करते हैं आपका स्वागत करते हैं' गीत द्वारा अतिथियों का स्वागत किया। पूर्व छात्राओं का तिलक लगाकर व बैज लगाकर स्वागत किया तथा पूर्व छात्राओं एवं अतिथियों पर कार्यक्रम के बीच बीच में पुष्पों से वर्षा की गई।

समारोह का प्रारम्भ ईश वन्दना वेद मंत्रों 'ओ३म् विश्वानि देवाः' से हुआ। समिति प्रधान, जगदीश प्रसाद गुप्ता ने अपने संबोधन में संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्था छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ सादा जीवन उच्च विचार एवं प्राचीन वैदिक संस्कृति पर विशेष बल देती है। संस्था में बालिकाओं को देशभक्त, कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासित, जिम्मेदार, स्वस्थ एवं उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। इसका पूर्ण श्रेय संस्थापक प्रधान स्व. श्री छोटूसिंह आर्य को जाता है।

इसके उपरान्त सन् 1945 में प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाली छात्राओं श्रीमती सरला देवी, शकुन्तला भार्गव एवं सुभद्रा देवी को तथा प्रथम अध्यापिकाओं श्रीमती लीलावती एवं सुशीला ग्रोवर को कमला शर्मा ने माल्यार्पण कर तथा जगदीश जी एवं प्रदीप जी ने शॉल उढ़ाकर और अमरमुनि जी ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया जो आज 80 वर्ष से ऊपर हैं। विद्यालयी छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वन्दे मातरम एवं टंकारा का देव दयानन्द सूरज बनकर आया था पर रोचक प्रस्तुतियाँ दी। बच्चों को उत्साहित करने हेतु अध्यक्ष श्री आनन्दजी आर्य ने 1000/– रू. की राशि से पुरस्कृत किया। मुख्य अतिथिजी के द्वारा पूर्व छात्रा स्नेह मिलन समारोह में वितरित की जाने वाली पत्रिका (आर्या स्मरिका) का विमोचन किया गया।

मुख्य अतिथि ब्रिगेड़ियर वसुधेश आर्य ने अपने संबोधन में कहा अनुशासन, ईमानदारी, निष्ठा एवं विश्वास आदि हमें सुनागरिक बनाता है इसके साथ ही वैदिक संस्कारों पर जोर देते हुए नारी सम्मान को महत्व दिया। छात्राओं को फौज में आने के लिए प्रेरित किया जिससे वे देश सेवा में अपना योगदान दे सकें तथा स्वयं की सुरक्षा कर सके।

पूर्व छात्राओं में प्रीति आर्य ने 'जग के सभी विद्यालयों में श्रेष्ठ' नामक कविता से अपने छात्रा जीवन के रोचक संस्मरण सुनाये, वहीं राज गुप्ता ने 'कौन कहता है स्मृतियाँ बनती हैं, बिगड़ती हैं बल्कि स्मृतियाँ तो यादगार बन जाती हैं। उनका कहना था आर्य समाज और वैदिक संस्कार देश की संस्कृति को बचाने में सहायक है, निधि भार्गव का कहना था यह संस्था छात्राओं का चहुँमुखी विकास करती है और बच्चों को आत्म निर्भर बनाती है, शालिनि शर्मा के अनुसार यहाँ की शिक्षा, अनुशासन, संस्कार और समय पाबंदी छात्राओं को सम्पूर्ण नागरिक बनाता है, मीता गुप्ता के अनुसार इस संस्था के संस्कार नारी को विश्वास और सम्मान दिलाते हैं उसे अबला नहीं बल्कि सबला बनाते हैं। साथ ही संस्था समाज कल्याण में भी सहयोगी है, बीना रस्तोगी, अनुमेहा भार्गव, चेतना, रेणु कक्कड, डॉ. इन्द्रा गुप्ता, निधि भार्गव आदि छात्राओं ने संस्था, यहाँ के अध्यापकगण आदि के बारे में अपने विभिन्न संस्मरण ही नहीं सुनाए अपितु ऐसे कार्यक्रम हर वर्ष करने का आग्रह किया जिससे वे हर वर्ष अपने साथियों से मिलें और अपने बचपन में कुछ समय के लिए खो जाएँ।

यज्ञ के द्वारा मनुष्य अपनी उन्नति अर्थात् ऊँचा उठता है। प्रज्ज्वलित अग्नि की ज्वालाओं को ऊँचा उठता देखकर मनुष्य के हृदय में उन्नति की प्रेरणा प्राप्त होती है तथा उसकी प्रसुप्त भावनाऐं जागृत हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

हैदराबाद, कोलकाता, दिल्ली, नोएडा, हरियाणा, जयपुर, फरीदाबाद, जोधपुर से छात्राएँ समारोह में सम्मिलित होने के लिए आई।

ब्रिगेडियर वसुधेश आर्य को जगदीश जी एवं प्रदीप जी ने एवं श्रीमती श्वेतिका आर्य को श्रीमती कमला शर्मा ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। प्रदीप जी ने आगन्तुक लगभग 1000 पूर्व छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि मंजिले उन्हीं को मिलती हैं जिनके हौसले बुलंद होते हैं।

अध्यक्ष आनन्दजी आर्य ने अपने संबोधन में कहा आर्य संस्थाएँ नारी को शिक्षित ही नहीं करती बल्कि उन्हें वीरांगना बनाते हैं जिससे वे आत्मनिर्भर बनती हैं और समाज में अपना स्थान बनाती हैं। टाण्डा में उनका स्कूल है जिसमें 2500 छात्राएँ अध्ययनरत हैं जिनमें से 1500 मुस्लिम लड़कियाँ हैं, सभी छात्राएँ हवन–सन्ध्या करती हैं तथा गायत्री मन्त्र का उच्चारण करती हैं।

संस्था की पूर्व छात्रा श्रीमती सरला जैन ने कार्यक्रम के बीच–बीच में अपने रोचक संस्मरणों और कविताओं को सुनाते हुए मंच संचालन कर सभी आगन्तुक अतिथियों को कार्यक्रम स्थल पर बाँधे रखा।

अंत में समिति निदेशक कमला शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा यहाँ से निकली छात्राएँ डॉक्टर, इंजिनियर, प्रशासनिक सेवाओं में ही नहीं बल्कि घर में गृहणी के रूप में आदर्श बनकर जीवन व्यतीत कर रही हैं। सभी को अपना कर्त्तव्य अपनी क्षमता के अनुसार करना चाहिए।

छात्राओं को अपनी पूरानी यादों को तरोताजा करने के लिए सभागार में प्रोक्टर लगवाया गया जिसको देखकर सभी मंत्र मुग्ध हो गए और अपने बचपन की यादों मे खों गए।

शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

समारोह में सर्वश्री डॉ. हरीश गुप्ता, डॉ. सुरेश गुप्ता, बलबीर सिंह करूण, अशोक आर्य, सुरेश दरगन, डॉ. राजेन्द्र आर्य, छबील दास पावा, जगदीश प्रसाद शर्मा, वेद प्रकाश शर्मा, च्यवन भार्गव, संजीव खत्री, दिनेश भाटिया, प्रमोद आर्य, मनोहर लाल भुंगडा, सौरभ आर्य, मोहिनी देवी, संजू गर्ग, माता मोहन देवी, माता बनारसी देवी, इन्द्रा आर्य, सुमन आर्य, दिविशा आर्य, अनामिका आर्य, विशिष्ट सदस्य, पूर्व छात्र–छात्राएँ, पूर्व शिक्षकगण, आर्य समाजी, तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए। कमला शर्मा, निदेशक–आर्यकन्या विद्यालय समिति

शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर

स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री छोटूसिंह आर्य संस्थापक अध्यक्ष आर्य कन्या विद्यालय समितत, अलवर की स्मृति एवं स्व. श्रीमती दिव्या आर्य धर्मपत्नी श्री प्रमोद आर्य की प्रथम पुण्यतिथि की पावन स्मृति में अलवर जिले की हैहय क्षत्रिय स्वजातीय मेधावी छात्र एवं छात्राओं का जिन्होंने 60 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये उनको ट्रस्ट की ओर से षष्ठम् पुरस्कार में उर्वशी भारतीया को 211 रूपये एवं जतिन सोमवंशी , इन्दूबाला, प्रियंका जायसवाल, भारती धानावत प्रत्ये को 1500-1500 रूपये तथा दिव्यांशु गोपालिया, राखी सिंह बेनीवाल, निष्ठा जायसवाल, गार्गी धानावत, उर्वशी, चाहत आर्य प्रत्येक को 1100-1100 रूपये और प्रिन्स बेनीवाल सांत्वना पुरस्कार 500 रूपये पुरस्कार वितरण किया। कार्यक्रम 8 सितम्बर 2013, रविवार को आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में सायं 3.30 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। समारोह की अध्यक्षत श्री वी.सी. साहु, जयपुर ने की। मुख्य अतिथि भामाशाह श्री रामस्वरूप जायसवाल, प्रदेशाध्यक्ष जायसवाल समाज, राजस्थान थे। मुख्य वक्त श्री अमर मुनि, महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान तथा विशिष्ट अतिथि- श्री बृजेन्द्र देव आर्य- मंत्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर, श्री [illegible] अहलुवालिया एडवोकेट नई दिल्ली, श्री रमेश बेनीवाल, अध्यक्ष हैहय क्षत्रिय शिक्षा समिति, अलवर मास्टर श्री प्यारे सिंह, पूर्व मंत्री कम्पनी बाग, विकास समिति, अलवर थे। इस अवसर पर आर्य समाज प्रचार कार्य हेतु आर्य समाज-स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर समाज-बजाजा बाजार, आर्य समाज अरावली विहार, अलवर एवं आर्य समाज राजगढ़ प्रत्येक को 2100-2100 रूपये भेंट दी गई। इस अवसर पर राजर्षि महाविद्यालय के नव नियुक्त अध्यक्ष श्री नवीन कुमार बेनीवाल का श्री प्रदीप कुमार आर्य, अध्यक्ष- नगर विकास न्यास, अलवर ने स्वागत सम्मान किया। समारोह से पूर्व स्व. श्रीमती दिव्या आर्य धर्मपत्नी श्री प्रमोद आर्य की प्रथम पुण्यतिथि की पावन स्मृति में सर्च सोसायटी की ओर सेठ मक्खन लाल चेरिटेबल ट्रस्ट ब्लड बैंक पर रक्त दान शिविर आयोजित किया गया। 51000/- रूपये ट्रस्ट व अस्पताल के कार्यो के लिए भामाशाह रामस्वरूप जी जायसवाल ने प्रदान किये। -अशोक कुमार आर्य

आर्य समाज कोटपूतली का पाँचवाँ आर्य महासम्मेलन एवं स्वराज्य यज्ञ

दिनांक 12 - 13 अक्टूबर 2013

इस वार्षिक उत्सव पर साधु-सन्यासी, वक्तागण, भजनोपदेशक एवं आर्य समाज के विद्वान पधार रहे हैं। स्वामी सुमेधानन्द जी वैदिक आश्रम पिपराली (सीकर), आचार्य वेद प्रकाश जी क्षोत्रिय दिल्ली, जगदीश जी मुनि अलीपुर, प्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय तेजवीर आर्य एण्ड पार्टी पानीपत हरियाणा, कु. अंजली आर्या वैदिक प्रवक्ता, करनाल (हरि.), भूपेन्द्रसिंह जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा राज., विजयसिंह जी भाटी (प्रधान), अमरमुनि जी (मंत्री), सुधीर जी (कोषाध्यक्ष), आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर, दयाराम (वेदी)-खातोली, सतवीर जी आर्य प्रान्तीय संचालक आर्य वीरदल राजस्थान एवं क्षेत्रिय साधु सन्यासी व समाजसेवी।

कार्यक्रम

प्रात: 8.30 से 12.00 बजे तक ...... यज्ञ, भजन, प्रवचन, प्रसाद वितरण
मध्याह्न 2 बजे से 6 बजे तक ....भजनोपदेश
रात्रि 8 से 12 बजे तक ....प्रवचन एवं भजनोपदेश

कार्यक्रम स्थल:

स्थान एल.एम. पैराडाइज मैरिज गार्डन

हीरा-मोती सिनेमा के पास लक्ष्मी नगर मोड़ नेशनल हाईवे 8, कोटपूतली

www.thearyasamaj.org

घर परिवार स्वर्ग कैसे बने?

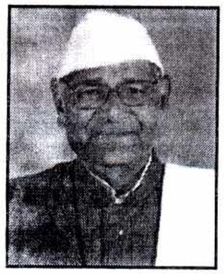

आज विज्ञान का युग है। इस युग में मनुष्य इतना भ्रमित हो गया है कि वह अपने वास्तविक धरातल को अपनी सुख शान्ति व आनन्द को भूलता चला जा रहा है। माना कि विज्ञान ने मनुष्यों को अनेक सुविधाएँ उपलब्ध करा दी है आज धन सम्पत्ति की भी अत्यधिक उपलब्धि हुई है। अत्यधिक सम्पत्ति की वृद्धि के कारण समाज में अनेकों दोष व्याप्त हो गये है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी लिखते है कि "जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थ हीनता, ईर्ष्या, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। आज मनुष्य इन सब का आदी हो गया है यही कारण है कि परमात्मा का दिया हुआ यह स्वर्ग लोक भी नरक की ओर बड़ी तेजी से बढ़ता जा रहा है। आज दार्शनिकों एवं विद्वानों के सम्मुख यह बहुत बड़ी चुनौती है कि इस तेजी से बढ़ते हुए नारकीय जीवन को कैसे स्वर्णिम बनाया जाय। आज खान-पान शुद्ध नहीं रहा, वायु शुद्ध नहीं रही, जल शुद्ध नहीं रहा, यहाँ तक कि मिट्टी शुद्ध नहीं रही ये ही सब विनाश के लक्षण है। हाल ही में उत्तराखंड में प्रलयंकारी तूफान इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। समय-समय पर अनेकों घटनाऐं घटित होती रही हैं जिनसे हम सब पूर्व परिचित है।

आज मनुष्य का जीवन एक मशीन की तरह हो गया है परिवार व समाज टूटते चले जा रहे हैं आज केवल मैं और मेरा तक मनुष्य की सोच रह गई। क्या आज कोई ऐसा उपाय है कि जिससे मानव मात्र को नरक की ओर बढ़ने से रोका जा सके। ऋषि दयानंद लिखते है कि कोई भी कार्य असाध्य नहीं है आज समाज में सुसंस्कारों का प्रचार कर व्यवहार में लाना परम आवश्यक है इसी से ही हमारा गृहस्थ जीवन स्वर्ग बनेगा क्योंकि सम्पूर्ण समाज का आधार गृहस्थ ही है। गृहस्थ आश्रम ही बाकी तीनों आश्रमों का पालन करता है। महर्षि संस्कारों के विषय में लिखते है कि जिनके द्वारा शरीर, आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते है और संतान अत्यन्त योग्य होती है इसलिए संस्कारों का पालन करना सब मनुष्यों को अनिवार्य है। परिवारों का सुसंस्कारित होना ही स्वर्ग प्राप्ति का साधन है और कुसंस्कार हमें नरक की ओर ले जाते है। आओं इस पर विचार करें कि हमारे परिवार सुसंस्कारित कैसे हो?

जिस भवन की नींव ही कमजोर हो वह भवन अधिक दिन तक नहीं टिक सकता इसलिए हमें बच्चे के निर्माण की योजना प्रारम्भ से ही बनानी पड़ेगी। बच्चे ही समाज के भविष्य है। वही सब मिलाकर परिवार व समाज बनता है। इसलिए अपने गृहस्थ को स्वर्ग बनाने का पहला उपाय है कि संस्कारों की शिक्षा एवं व्यवहार गृहस्थ में लागू की जाये। 16 वर्ष की कन्या एवं 25 वर्ष का पुरुष पूर्ण विद्या प्राप्त कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करे। महर्षि स्वामी दयानन्द संस्कार विधि के गर्भाधान संस्कार प्रकरण में लिखते है कि जो अपने कुल की उत्तमता, उत्तम संतान, दीर्घायु, सुशील, बुद्धिबल-पराक्रमयुक्त, विद्वान और श्रीमान करना चाहें, वे सोलहवें वर्ष से पूर्व कन्या और 25 वें वर्ष से पूर्व पुत्र का विवाह कभी नहीं करें। यही सब सुधार का सुधार, सब सौभाग्य का सोभाग्य और सब उन्नतियों की उन्नति करने वाला कर्म है कि इस अवस्था में ब्रह्मचर्य रखकर अपनी संतानों को विद्या और सुशिक्षा ग्रहण करावें कि जिससे उत्तम संतान हो। ऋतु दान के समय हमें ध्यान रहे कि बधु रजस्वला के बाद 4 दिन छोड़कर एवं पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्दशी व अष्टमी छोड़कर ऋतुदान करे। ऋतुदान के समय दोनों पति पत्नी अति प्रसन्न हो, यह भी विचार करें कि हमें कैसी संतान, धार्मिक, बलवान, बुद्धिमान, विद्वान चाहिए वैसा दोनों पति पत्नी कल्पना करें। उत्तम संतान प्राप्ति के लिए मुख्य हेतु यथोक्त वर-वधू के आहार पर निर्भर है। इसलिए पति पत्नी अपने शरीर, आत्मा की पुष्टि के लिए बल और बुद्धि आदि की वर्द्धक सर्वोषधि का सेवन करे। सर्वोषधि ये है दो खंड आँबाहलदी, दूसरी खाने की हलदी, चंदन, मुरा (यह नाम दक्षिण में प्रसिद्ध है) कुष्ठ, जटामांसी, मोरवेल, शिलाजीत, कपूर, मुस्ता, भद्रमोथ। इन सब ओषधियों को चूर्ण करके, सब सम भाग लेके, उदम्बर (गूलर) के काष्ठ पात्र में गाय के दूध के साथ मिलाकर उसका दही जमा और उदम्बर की लकडी से मंथन करके उसमें से मक्खन निकाल उस घी में सुगन्धित द्रव्य केसर कस्तूरी, जायफल, इलायची, जावत्री मिलाकर गर्भाधान संस्कार में लिखे मंत्रों से यज्ञ करें और उसी घी को दोनों जने खीर अथवा भात के साथ यथा रुचि भोजन करे। इस प्रकार गर्भाधान करके आप सुशील, विद्वान, दीर्घायु, तेजस्वी और निरोग संतान उत्पन्न कर सकते है।

बालक की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। बालक का बौद्धिक विकास 80 प्रतिशत 5 वर्ष की आयु में ही हो जाता है, बाकी 20 प्रतिशत ज्ञान वह पूरे जीवन में प्राप्त करता है इसलिए स्वामी जी लिखते है कि जन्म से 5 वें वर्ष तक माता का ही शिक्षा क्षेत्र है, माता किस प्रकार से शिक्षा करें यह बताते हुए वे लिखते है- बालकों की माता सदा उत्तम शिक्षा दे, जिससे संतान सभ्य हो और किसी अंग से कुचेष्टा न कर पावें। जब बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके, वैसा उपाय करें। जब वह कुछ बोलने व समझने लगे तो वह उसे सुंदर बातों से माता-पिता व विद्वान उसके पास बैठकर उसे योग्य व्यवहार की शिक्षा दें कि उसे दूसरों से कैसे व्यवहार करना चाहिए। योग्य व्यवहार से ही उसकी समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। संतान जितेन्द्रय विद्या प्रिय और सत्संग में रूचि लेने वाला बने। व्यर्थ क्रीडा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक , किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या-द्वेषादि न करे। सदा सत्य भाषण शौर्य, धैर्य, प्रसन्नबदनत्व आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो उसे माता पिता व गुरुजन करावें। बालपन में दी गई शिक्षा उसके संस्कार में निहित होगी, उसे वह जीवन पर्यन्त नही भूल सकता, कभी उसके जीवन में अच्छाई और बुराई का निर्णय करने का अवसर आवेगा तो वह बचपन की शिक्षा उसके काम आवेगी। वह कभी भटकेगा नहीं। इसलिए भावी गृहस्थ की सुख-शांति व आनन्द इस बात पर निर्भर करता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी शिक्षा न हो तब तक माता-पिता व आचार्य उक्त सभी बातों का सदैव ध्यान रखें। संतान उत्तम होगी तो समाज उत्तम होगा और उत्तम समाज ही स्वर्ग के समान होगा। गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते समय विवाह संस्कार में पति और पत्नी के कर्तव्यों को दर्शाया जाता है। वे एक दूसरे से प्रतिज्ञा करते है कि उनमें पारस्परिक सौभाग्य वृद्धि करेंगे। हम सदैव धर्म मार्ग पर चलेंगे। परस्पर साहचर्य पूर्वक दीर्घ जीवन जीने का यत्न करेंगे। हम एक दूसरे के ऐश्वर्य का सदैव ध्यान रखेंगे। सुसंतान पैदा कर प्रजा वृद्धि करेंगे। हम परस्पर एक दूसरे से कोई बात नहीं छुपावेंगे चोरी से कोई खान पान नहीं करेंगे। हम एक दूसरे में रुचि लेकर सौहार्द बनाये रखेंगे। इसके अलावा महर्षि स्वामी दयानन्द जी यजुर्वेद भाष्य में विवाहकाल में दो अन्य प्रतिज्ञाएं भी कराने का निर्देश देते है। प्रहली प्रतिज्ञा- हम दोनों प्रतिज्ञा करते है कि जैसे हम अपने हित के लिए आचरण करेंगे, वैसे ही अपने माता पिता आचार्य और अतिथियों के सुख के लिए भी निरन्तर बर्ताव करेंगे। दूसरी प्रतिज्ञा- हम दोनों प्रतिज्ञा करते है कि जिस ब्रह्मचर्य से जिस विद्या से हम दोनों कृतकृत्य होते है, उस ब्रह्मचर्य और विद्या का सदैव प्रचार करेंगे और पुरुषार्थ से धन आदि को बढ़ाकर उसे सन्मार्ग में व्यय करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उक्त सभी बातों को ग्रहण कर हम निश्चित रूप से हमारे गृहस्थ जीवन को स्वर्ग बना सकते है स्वर्ग कोई स्थान विशेष का नाम नहीं है यह गृहस्थ जीवन ही स्वर्ग है।

अमर मुनि संपादक - आर्य मार्तण्ड

www.thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने का संकल्प कराया

आर्य समाज सुमेरपुर, जिला-पाली राजस्थान का वेद प्रचार सप्ताह दिनांक 22.8.2013 से 28.8.2013 तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें प्रतिदिन आचार्य विष्णु मित्र जी बिजनौर के ब्रह्मतव में यज्ञ हुआ। आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज की ब्रह्मचारिणियों द्वारा सस्वर वेदपाठ किया गया।

आचार्य विष्णुमित्र जी के विभिन्न विषयों पर वैदिक सिद्धांतों से ओत-प्रोत प्रवचन हुए। श्री नरेशदत्त जी आर्य के सुमधुर भजनोपदेश हुए। पूर्णाहुति के अवसर पर समस्त यज्ञमानों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का संकलप कराया गया। आर्य समाज की ओर से निःशुल्क सत्यार्थ प्रकाश दिये गये। वेद प्रचार सप्ताह में आर्य परिवारों के अतिरिक्त नगर के गणमान्य नागरिक एवं विद्यालय के छात्र-छात्राऐं अध्यापक उपस्थित रहे। आर्य समाज के प्रधान श्री गणेश जी विश्वकर्मा ने विद्वानों व श्रोताओं का आभार व्यक्त किया। – गुलाबसिंह राजपुरोहित, मंत्री

आर्य समाज प्रचार समिति, अलवर द्वारा मासिक यज्ञ एवं वेद प्रचार

आर्य समाज प्रचार समिति, अलवर द्वारा श्री सुरेश गुप्ता एवं बहिन श्रीमती राज गुप्ता के सहयोग से स्थानीय पुराना बर्फखाना स्थित परिसर में विगत दिनांक 29 सितम्बर 2013, रविवार को सायंकाल परम्परागत मासिक यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। पुरोहित पं. शिव कुमार कौशिक ने यज्ञ कार्य सम्पन्न कराया। तदुपरान्त श्री सुरेश गुप्ता, श्रीमती राज गुप्ता एवं श्रीमती ईश्वरी शर्मा ने सुमधुर भजन प्रस्तु किये। इस अवसर पर नन्हे-नन्हे बच्चों ने भी देश भक्ति गीत सुनाकर सभी को आनन्दित कर दिया। श्री कौशिक जी ने यज्ञ का महत्व प्रतिपादित करते हुए यज्ञ को मानव मात्र का श्रेष्ठतम कर्म बताया। कहा कि यज्ञ हमें नित्य प्रति करते रहना चाहिए। अन्त में मंत्री बृजेन्द्र आर्य ने सभी आगन्तुकों का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे, जिनमें सर्व श्री रमेश चुघ, के.एल. अदलखा, के.एल. सिरोही, अदलखा, कै. सिरोही, गंगा डाटा, मनोहर लाल भुंगडा, प्रेमलता आर्य, जी.पी. मित्तल, सुनील आर्य, कमलेश गुप्ता, राजेन्द्र शर्मा आदि प्रमुख हैं।

-बृजेन्द्र आर्य, मंत्री प्रचार समिति

जलझूलनी पर्व (मेला) पर वैदिक प्रचार-प्रसार

शाहपुरा के पिवणीया तालाब की पाल पर स्थित आर्य समाज के श्रीमद् दयानंद आश्रम (समाज का बगरू) में जलझूलनी ग्यारस के मेले पर विद्युत सज्जा की गई तथा टी.वी. द्वारा महर्षि दयानंद के जीवन की घटनाऐं एवं आर्य विद्वानों के प्रवचन आदि दिखाये गये।

आर्य समाज शाहपुरा के ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थलो के चित्रण को भी प्रस्तुत किया गया। देखने हेतु आगन्तुक जन सैलाब को वैदिक साहित्य का निःशुल्क वितरण किया गया तथा ठंडे जल की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम में प्रधान कन्हैया लाल आर्य, उप प्रधान हीरालाल आर्य, मंत्री सत्यनारायण तोलम्बिया, चन्द प्रकाश झंवर, गोपाल राजगुरु आदि का सक्रीय सहयोग रहा। –सत्यनारायण तोलम्बिया, मंत्री

कार्तिक माह में परम्परागत कार्तिक मासीय यज्ञ का शुभारम्भ

स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर स्थित आर्य समाज मंदिर में आगामी दिनांक 18 अक्टूबर से 17 नवम्बर 2013 तक कार्तिक मासीय यज्ञ प्रारम्भ होने जा रहा है। साथ ही दिनांक 16 व 17 नवम्बर 2013 को आर्य समाज का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान, तपस्वी संत व भजनोपदेशकों के प्रवचन भजन एवं वेदोपदेश सुनने को मिलेंगे।

उपरोक्त कार्यक्रम सम्बन्धी विस्तृत जानकारी आगामी अंक द्वारा दी जावेगी। – बृजेन्द आर्य, मंत्री आर्य समाज दयानंद मार्ग, अलवर

श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ समिति, अलवर

गाँधी जयन्ती के उपलक्ष्य में दिनांक 2.10.2013, बुधवार को प्रातः 9.30 बजे से 12.00 बजे तक श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ समिति आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर से 56वाँ निःशुल्क एलोपैथिक, होम्योपैथिक चिकित्सा एवं जाँच शिविर आयोजित किया गया। शिविर में एचबी, ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर आदि की निःशुल्क एवं लिपिड प्रो., ग्रियराइड, थायराइड प्रो., लिवर फंक्शन, किडनी फंक्शन, एबीएआईसी आदि की क्योरवैल डायग्नोस्टिक सेन्टर के सहयोग से रियायती दरों पर जाँच की गई। रोगियों को आवश्यकतानुसार निःशुल्क दवाईयां दी गई। शिविर में डॉ. देशबन्धु गप्ता तथा डॉ. दिनेश गुप्ता अपनी निःशुल्क सेवाएं प्रदान की।

- प्रदीप आर्य, प्रधान- श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ समिति, अलवर

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।